P.G. (Sem. III)

CC- XI, unit- II

- काव्यदोषों का सामान्य परिचय (काव्यप्रकाश)

By
Dr. Sanjay Kumar chaubey
(Assistant professor)
Dept. of Sanskrit
H.D. Jain college, Ara

Scanned by CamScanner

(काव्यदोष का सामान्य परिचय)

आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश के सप्तम उल्लास में काव्यगत दोषों का विवेचन बड़े ही विस्तार से किया है। प्रथमतः दोषों का सामान्य लक्षण करते हुये लिखा है—

मुख्यार्थहतिर्दोषो रसश्च मुख्यस्तदाश्रयाद् वाच्यः।
उभयोपयोगिनः स्युः शब्दाद्यास्तेन तेष्वपि सः॥

अर्थात् मुख्यार्थ की हति यानि अपकर्ष जिससे होता है उसे दोष कहते हैं। यहाँ मुख्यार्थ पद अभिप्राय वाच्यार्थ न होकर रस है। अतः मुख्यतया रस के अपकर्षजनक कारक को दोष कहते हैं। और रस चूंकि वाच्यार्थ के आश्रित होता है इस-लिये रस के साथ चमत्कारी वाच्य का अपकर्षक भी दोष कहलाता है जिसे अर्थदोष कहते हैं। इसके अतिरिक्त शब्दादि रस तथा वाच्यार्थ इन दोनों के बोधन में सहायक होते है इसलिये इनमें भी वह दोष रहता है और वह पददोष कहलाता है।

दोषों का विभाजन:— मम्मट ने दोषों को दो रूपों में विभाजित किया है, सामान्य दोष व विशेष दोष। विशेष दोषों में शब्दगत (21) अर्थगत (23) तथा रसगत (13) दोषों का विवेचन है।

सामान्य दोष:- पद, पदांश तथा वाक्य में पाये जाने वाले 16 दोषों का परिगणन निम्न प्रकार से है —

1. श्रुतिकटु	9 त्रिविध अश्लील
2. च्युतसंस्कृति	10 सन्दिग्ध
3. अप्रयुक्त	11 अप्रतीत
4. असमर्थ	12. ग्राम्य
5. निहतार्थ	13. नेयार्थ
6. अनुचितार्थ	14. क्लिष्ट
7. निरर्थक	15. अविमृष्ट विधेयांश
8 अवाचक	16 विरुद्धमतिकृत

दुष्टं पदं श्रुतिकटु च्युतसंस्कृत्यप्रयुक्तमसमर्थम्।
निहतार्थमनुचितार्थं निरर्थकमवाचकं त्रिधाऽश्लीलम्।
सन्दिग्धमप्रतीतं ग्राम्यं नेयार्थमथ भवेत् क्लिष्टम्।
अविमृष्टविधेयांशं विरुद्धमतिकृत् समासगतमेव॥

इन सोलह दोषों में से अन्तिम तीन दोष केवल समास में होते हैं तथा शेष पदगत एवं समासगत दोनों में होते हैं। कुछ के उदाहरण इनमें से द्रष्टव्य हैं —

1. श्रुतिकटु :- कठोर वर्णरूप दुष्ट अर्थात् रसापकर्षक पद श्रुतिकटु कहलाता है — "श्रुतिकटु परुषवर्णरूपं दुष्टम्"

यथा — अनङ्गमङ्गलगृहापाङ्गभङ्गितरङ्गितैः।
आलिङ्गितः स तन्वङ्ग्या कार्तार्थ्यं लभते कदा॥

यहाँ कार्तार्थ्यं यह पद श्रुतिकटु है।

2. च्युतसंस्कृति :- व्याकरण के लक्षण से हीन अर्थात् जो पद व्याकरण के नियम के अनुकूल न हो उसे च्युतसंस्कृति दोष कहते हैं — "च्युतसंस्कृति व्याकरणलक्षणहीनम्"।

यथा — एतन्मन्दविपक्वतिन्दुकफलश्यामोदरापाण्डुर-
प्रान्तं हन्त पुलिन्दसुन्दरकरस्पर्शक्षमं लक्ष्यते।
तत्पल्लीपतिपुत्रि कुञ्जरकुलं कुम्भाभयाभ्यर्थना-
दीनं त्वामनुनाथते कुचयुगं पत्रावृतं मा कृथाः॥

यहाँ व्याकरण के नियमानुसार आशीर्वाद अर्थ में ही "आशिषि नाथः" नाथ धातु से आत्मनेपद का विधान होता है परन्तु प्रकृत उदाहरण में याचनार्थक नाथ धातु से आत्मनेपद का प्रयोग किया गया है। अतः च्युतसंस्कृति दोष है।

3. अप्रयुक्त :- कोशादि में किसी अर्थविशेष में पठित हुआ होने पर भी कवियों द्वारा जिस अर्थ में न अपनाया हुआ शब्दप्रयोग अप्रयुक्त दोष कहलाता है — "अप्रयुक्तं तथाम्नातमपि कविभिर्नादृतम्" यथा —

यथायं दारुणाचारः सर्वदैव विभाव्यते।
तथा मन्ये दैवतोऽस्य पिशाचो राक्षसोऽथवा॥

यहाँ "दैवतानि पुंसि" इस प्रकार से अमरकोश में पठित होने पर भी दैवत शब्द किसी महाकवि के द्वारा पुल्लिङ्ग में प्रयोग नहीं किया गया है। अतः पुल्लिङ्ग प्रयुक्त दैवत शब्द (यहाँ) अप्रयुक्त दोष से युक्त है)

असमर्थ :- जो शब्द रूप में पढ़ा गया हो परन्तु उस अर्थ में उसकी शक्ति नहीं है उसको असमर्थ दोष कहते हैं।

असमर्थं यत्तदर्थं पठ्यते न च तत्रास्य शक्तिः ॥

यथा — तीर्थान्तरेषु स्नानेन समुपार्जितसत्कृतिः।
सुरस्रोतस्विनीमेष हन्ति सम्प्रति सादरम् ॥

यहाँ 'हन्ति' यह पद गमनार्थ में असमर्थ है।

निहतार्थ :- जो शब्द दोनों अर्थों का वाचक होने पर भी अपेक्षाकृत अप्रसिद्ध अर्थ में प्रयुक्त हो वहाँ निहतार्थ दोष होता है।

निहतार्थं यदुभयार्थमप्रसिद्धेऽर्थे प्रयुक्तम् ॥

यावकरसार्द्रपादप्रहारशोणितकचेन दयितेन।
मुग्धा साध्वसतरला विलोक्य परिचुम्बिता सहसा ॥

यहाँ रुधिर रूप में अधिक प्रसिद्ध शोणित शब्द का प्रयोग उज्ज्वल रूप कम प्रसिद्ध अर्थ में प्रयुक्त है। अतः निहतार्थ है।

अनुचितार्थ :- वर्णन के प्रतिकूल शब्द का प्रयोग हो। अनुचितार्थ है। जैसे —

तपस्विभिर्या सुचिरेण लभ्यते
प्रयत्नतः सत्रिभिरिष्यते च या।
प्रयान्ति तामाशु गतिं यशस्विनो
रणाश्वमेधे पशुतामुपागताः ॥

यहाँ पशु पद मारे जाने वाले की कातरता का व्यञ्जक है अतः वीर रस के वर्णन में अनुचितार्थ है।

इस प्रकार आचार्य मम्मट ने पदगत सामान्य दोषों का उदाहरण प्रस्तुत किया है, तथा आगे पदांशगत व वाक्यगत दोषों का भी उदाहरण सहित से प्रतिपादित किया है।